रानी सराय इंदौर का ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य विशेषताएं : एक गहन विश्लेषण

नीरज द्विवेदी

शोधार्थी – देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

सारांश – होलकर वंश के शासक महाराजा शिवाजीराव होल्कर की पत्नी वाराणसी बाई के बीमार होने पर महाराजा शिवाजीराव होलकर ने धार्मिक और पारमार्थिक कार्यों हेतु 1 लाख 25 हजार रुपये की राशि का प्रावधान किया था। इसी राशि से महारानी वाराणसी बाई के निधन के बाद शिवाजीराव होल्कर के पुत्र और उत्तराधिकारी महाराजा तुकोजीराव होल्कर तृतीय द्वारा रानी सराय का निर्माण करवाया गया। इसका निर्माण 1907 ईस्वी में पूर्ण हुआ।

मध्य प्रदेश की व्यवसायिक राजधानी इंदौर में स्थित रानी सराय, शहर की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का प्रमाण है। प्रस्तुत शोध पत्र रानी सराय के बहुमुखी आयामों पर प्रकाश डालते हुए इसके ऐतिहासिक महत्व, वास्तुशिल्प संबंधी विशेषताओं, सामाजिक–आर्थिक प्रभाव और समय के साथ शहरी विकास की जांच करता है। विषय से सबंधित साहित्य का पुनरावलकन, वास्तुशिल्प विश्लेषण और शहरी नियोजन के परिप्रेक्ष्य को एकीकृत करने वाले एक बहु–विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से, यह शोध पत्र रानी सराय के अतीत और वर्तमान की विविध परतों पर प्रकाश डालता है। इसके अतिरिक्त, यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस अमूल्य विरासत स्थल को संरक्षित करने के उद्देश्य से संरक्षण और पुनरोद्धार प्रयासों की चुनौतियों और अवसरों की पड़ताल करता है। रानी सराय के आसपास की जटिलताओं को उजागर करके, यह अध्ययन इंदौर की पहचान और शहरी ढांचे को आकार देने में इसकी भूमिका की गहरी समझ में योगदान देता है।

इंदौर के मध्य में स्थित रानी सराय का अपना ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। प्रस्तुत शोध पत्र सांस्कृतिक आदान–प्रदान, आर्थिक गतिविधियों और सामुदायिक एकजुटता के केंद्र के रूप में रानी सराय की भूमिका का विश्लेषण करता है।

प्रस्तावना – **अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः**
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः

अर्थात मनुष्य का शरीर नश्वर है तथा धन और वैभव भी शाश्वत नही होते। मृत्यू सदैव हमारे साथ रहती है, अर्थात कभी भी हो सकती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि धर्म द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतो का पालन कर पुण्य लाभ प्राप्त करे।

इसी भावना से प्रेरित होकर प्राचीन काल से ही अनेक राजाओं, महाराजाओं तथा गणमान्य व्यक्तियों ने जनकल्याण, ख्याति, तथा पुण्य की अभिलाषा से अनेक धर्मशालाओं एवं सरायों का निर्माण करवाया।

सराय शब्द **तुर्की** भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ यात्रियों के ठहरने का स्थान या मुसाफिर खाना होता है। **सराय अधिनियम 1867** ईस्वी के अनुसार "सराय से तात्पर्य किसी ऐसे भवन से है, जो यात्रियों के आश्रय एवं आवास के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार सराय ऐसे प्रतिष्ठान होते है, जिनका निर्माण यात्रियों के विश्राम एवं सुरक्षा हेतु प्रमुख राजमार्गो के किनारे किसी शहर या गांव में कराया जाता है। सरायों के प्रबंध और संचालन के लिए अनेक कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती है, जिनका प्रमुख **सरायपाल** होता है। यहां पर यात्रियों के विश्राम हेतु बिस्तर तथा भोजन और पानी की व्यवस्था की जाती है।

भारत में यात्रियों के लिए आश्रय की अवधारणा नई नहीं है। ऐतिहासिक अभिलेखों और पुस्तकों में धर्मशाला, विहार, सराय और मुसाफिरखाना जैसे शब्दों का उल्लेख मिलता है। इन प्रतिष्ठानों में सभी पर्यटकों, चाहे वे तीर्थ यात्री, विद्वान या व्यापारी हो, सभी को आश्रय प्रदान किया जाता था। डॉ. मोतीचंद श्रीवास्तव द्वारा लिखी गई पुस्तक **सार्थवाह** से हमें पता चलता है कि प्राचीन काल में सड़कों के किनारे यात्रियों के विश्राम के लिए धर्मशालाओं का निर्माण किया जाता था। **धम्मपद अट्ठकथा** के अनुसार तक्षशिला के बाहर एक सभा भवन था, जिसमें नगर के द्वारा बंद हो जाने पर यात्री ठहर सकते थे। **अशोक के सातवें स्तंभ** लेख द्वारा हमे उसके द्वारा बनवाए गए आश्रय स्थलों के विषय में जानकारी मिलती है। गुप्त काल में धर्मशालाओं के प्रबंधन एवं संचालन के लिए **अवस्थिक** नामक विशेष अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी । **हेंगसांग** हमे बताता है कि सम्राट हर्षवर्धन ने भारत के सभी नगरों एवं राजमार्गों पर पुण्य शालाओं का निर्माण कराया तथा उन्हें भोजन और पेय पदार्थो से भर दिया।

सल्तनत कालीन शासकों एवं मुगल कालीन शासकों तथा उनके परिजनों द्वारा बहुत बड़ी संख्या में सरायों का निर्माण कराया गया। इस काल में फारसी भाषा में **कारवां सराय** शब्द का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है **"राजमार्गों पर बने विश्राम स्थल"**। मध्यकाल में सरायों के निर्माण में अफगान शासक शेरशाह सूरी अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। ऐसा माना जाता है कि उसने प्रमुख राजमार्गों के किनारे **1700** सरायों का निर्माण करवाया। सरायों के निर्माण के परिणाम स्वरूप **भटियारा** नमक वर्ग का उदय हुआ। सुभाष परिहार अपनी पुस्तक **"मुगल भारत में सड़क परिवहन"** में लिखते है कि हर पांच या आठ कोश पर एक सराय होती थी। विदेशी यात्री पीटर मुंडी आगरा में नूरजहां द्वारा निर्मित **नूर महल सराय** का उल्लेख करता है।

इंदौर की लोक माता देवी अहिल्या बाई होलकर ने देश के विभिन्न भागों में अनेक सरायों एवं धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। देवी अहिल्याबाई होलकर ने सनातन धर्म के पुनरोत्थान हेतु उल्लेखनीय कार्य किया। उन्ही के कार्यों से प्रेरित होकर होलकर वंश के उत्तराधिकारियों ने अनेक जन कल्याणकारी कार्य किए, जिसमें महाराजा तुकोजीराव होलकर द्वारा निर्मित रानी सराय प्रमुख है।

शब्द कुंजी – सार्थवाह, अवस्थिक, सरायपाल, कारवां सराय, भटियारा, सनद

शोध पत्र का उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रानी सराय इंदौर के ऐतिहासिक महत्व, इसकी स्थापत्य संबंधी विशेषताओं, सांस्कृतिक प्रासंगिकता तथा स्थानीय समुदायों पर इसके द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके अतिरिक्त शोध पत्र का लक्ष्य रानी सराय इंदौर के संरक्षण हेतु किए गए सरकारी एवं सामाजिक प्रयासों का मूल्यांकन कर शहरी विकास में इसकी भूमिका का विश्लेषण करना है।

अध्ययन का क्षेत्र – यह शोध पत्र महारानी वाराणसी बाई होलकर की स्मृति में, महाराजा शिवाजी राव होलकर द्वारा निर्मित रानी सराय पर आधारित है, जो इंदौर शहर के मध्य रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इंदौर शहर में इसके ऐतिहासिक महत्व, वास्तुशिल्प विशेषताओं, शहरी विकास संदर्भ और सांस्कृतिक प्रभाव की जांच शामिल है।

तथ्यों का संकलन एवं शोध विधि – प्रस्तुत शोध पत्र में शोध कर्ता द्वारा ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग करते हुए विषय से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा तथ्यों का संकलन एवं अध्ययन कर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह शोध पत्र विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं के गहन अध्ययन, स्थल सर्वेक्षण एवं विषय से संबंधित इतिहासकारों द्वारा दिए गए साक्षात्कार पर आधारित है।

इंदौर नगर का संक्षिप्त परिचय – इंदौर शहर भारत के केंद्र में स्थित मध्य प्रदेश राज्य का एक महानगर हैं, जो मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में मालवा पठार के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इंदौर समुद्र तल से 553 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह शहर कान्ह और सरस्वती नामक दो छोटी नदियों के किनारे स्थित है, जो क्षिप्रा की सहायक नदियां है। यहां की उपजाऊ भूमि और अनुकूल जलवायु ने एक वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्र के रूप में इंदौर नगर के विकास में योगदान दिया है। जनसंख्या की दृष्टि से इंदौर मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है। मराठी, हिंदी और मालवी प्रभावों से युक्त शहर की विविध सांस्कृतिक विरासत इसके आकर्षण को बढ़ाती है।

उत्खनन एवं सर्वेक्षण से प्राप्त उपकरणों एवं सामग्री की दृष्टि से देखा जाए तो इंदौर नगर का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। यहां पर कई लाख वर्ष पुराने जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। 1972 ईस्वी में इंदौर शहर के आजाद नगर में किए गए उत्खनन के परिणाम स्वरूप आदि मानव द्वारा उपयोग किए जाने वाले अनेक उपकरणों की प्राप्ति यहां से हुई है। इस प्रकार यहां पर मानव जीवन की शुरुआत आखेटक के रूप में हजारों वर्ष पूर्व प्रारंभ हो चुकी थी।

ऐसा माना जाता है कि इंदौर शहर का प्रारंभिक नाम इंद्रपुर था, जो शहर में स्थित अत्यंत प्राचीन इंद्रेश्वर महादेव मंदिर के नाम पर रखा गया था। इंद्रेश्वर मंदिर का निर्माण 10 वीं शताब्दी में राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय द्वारा करवाया गया था।

इंदौर शहर कंपेल के जमींदार नंदलाल मंडलोई द्वारा स्थापित एक स्वतंत्र रियासत के रूप में पहले से ही अस्तित्व में था। वे नंदलाल मंडलोई ही थे, जिन्होने इस क्षेत्र में मराठों के आवागमन की अनुमति दी और खान नदी के पास शिविर लगाने के लिए मराठों को स्वीकृति प्रदान की। सन 1727 ईस्वी में होलकर वंश के संस्थापक मल्हार राव होलकर को मालवा सूबे के पांच महलों की सनद प्राप्त हुई। मल्हार राव होलकर को 3 अक्टूबर 1730 ई. को मालवा का सर्वोच्च प्रशासक नियुक्त कर उसे मालवा के 74 परगनो की सरंजाम प्रदान की गई। 20 जनवरी 1734 ई. को पेशवा बाजीराव प्रथम द्वारा छत्रपति शाहू की अनुमति से मल्हार राव प्रथम की पत्नी गौतमा बाई होलकर के नाम पर खासगी जागीर की सनद प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस प्रकार मालवा में होलकर राज्य की स्थापना का सूत्रपात हुआ। होलकर वंश के शासकों ने शहर की संस्कृति, अर्थव्यवस्था और वास्तुकला को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रानी सराय – महाराजा शिवाजीराव होलकर बहादुर इंदौर के होलकर राजवंश के शासक तुकोजी राव होलकर द्वितीय के पुत्र थे। इनकी मां महारानी पार्वती बाई साहेब थी। इन्होंने मध्य भारत के डेली स्कूल कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। 17 जून 1886 को महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वितीय की मृत्यु के उपरांत इनका इंदौर के 12 वें होलकर महाराजा के रूप में राज्याभिषेक किया गया। महाराजा शिवाजी राव होलकर ने इंदौर नगर के नियोजित विकास के लिए उस वक्त के प्रख्यात नगर नियोजक पैट्रिक गिडीज को इंग्लैंड से इंदौर बुलाया। उसी ने इंदौर शहर का पहला मास्टर प्लान बनाया। महाराजा शिवाजी राव होलकर के कार्यकाल में इंदौर में कई भवनों का निर्माण हुआ, जिसमे **होलकर कालेज**, **शिवविलाश पैलेस**, **मोती बंगला**, **गांधी हाल**, **फूटी कोठी** और **बड़वाह का दरियाव** महल प्रमुख है।

महाराजा शिवाजी राव होलकर का विवाह महारानी वाराणसी बाई होलकर के साथ हुआ था। महारानी वाराणसी बाई ने बीमार होने पर धार्मिक और पारमार्थिक कार्यों हेतु 1 लाख 25 हजार रुपए दान किए। इसी राशि से 1885 में महाराजा शिवाजी राव होलकर ने इंदौर आने–जाने वाले यात्रियों की सुविधा हेतु रेलवे स्टेशन के समीप एक सराय का निर्माण प्रारंभ करवाया। जब ब्रिटिश सरकार ने महाराजा शिवाजी राव होलकर पर कुप्रशासन का आरोप लगाया तो महाराज ने 31 जनवरी 1903 को अपने बेटे तुकोजीराव होलकर तृतीय के पक्ष में राज सिंहासन रिक्त कर दिया। महाराजा तुकोजी राव होलकर तृतीय के कार्यकाल में 1907 ईस्वी में रानी सराय का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। इस सराय का नाम **न्यू वाराणसी बाई होलकर सराय** रखा गया। सन 1909 ईस्वी में सराय के प्रवेश द्वार पर महारानी की सहायक सेविका गेरट्रूड की मृत्यु के उपरांत गेरट्रूड की स्मृति में महाराजा तुकोजी राव तृतीय के समय महारानी चंद्रावतीबाई द्वारा एक भव्य फव्वारे का निर्माण करवाया गया। उस समय भवन निर्माण पर 151186 रुपए खर्च हुए। सराय

के निर्माण में दान की राशि के अलावा शेष राशि का भुगतान महाराज ने किया था। इस प्रकार महाराजा शिवाजीराव होलकर ने अपनी पत्नी की इच्छापूर्ति हेतु महारानी सराय का निर्माण करवाया।

रानी सराय इंदौर स्त्रोत – अमर उजाला, इंदौर 18 फ़रवरी 2024

स्थापत्य कला – रानी सराय का निर्माण उस समय भवन निर्माण के लिए प्रसिद्ध **मेसर्स चार्ल्स स्टीवेन्सन एंड कंपनी बंबई** द्वारा किया गया। चार्ल्स स्टीवेन्सन कंपनी ने ही इस भवन का डिजाइन तैयार किया था। स्थापत्य एवं कारीगरी की दृष्टि से यह इमारत बेजोड़ है। यह इमारत फौलादी एरन पत्थरों की दोहरी–तिहरी जुड़ाई से बनी है। इस दो मंजिला भवन में शीतलता लाने हेतु गहरे भूरे रंग के पत्थरों का प्रयोग किया गया है। कहां जाता है कि भवन निर्माण हेतु काले पत्थर रालामंडल से लाए गए। यह इमारत स्थापत्य की मुगल शैली पर आधारित है। इस दो मंजिला संरचना में एक बल्बनुमा गुंबद है, जैसा कि अक्सर मुगल इमारतों में पाया जाता है। मुगल इमारतों की संरचना और चरित्र का एक समान पैटर्न होता है, जिसमें बड़े बल्ब डोम, कोनों में पतले मीनार, बड़े हॉल, बड़े वॉल्ट वाले गेटवे और नाजुक जालियां बनाई जाती थीं। रानी सराय भी कुछ इसी तरह बनाई गई थी। इमारत में अधिकांश स्थानों पर प्रवेश के लिए मेहराब बने हुए हैं। दूसरी मंजिल तक जाने की सीढ़ियां प्रस्तर खंडों से बनाई गई हैं। इमारत में दो विशाल स्तम्भ बने हुए हैं, जिन्हें धौलपुर के प्रस्तरों द्वारा पांच खंडों में बनाया गया है। पहली मंज़िल की सम्पूर्ण इमारत और इस मंजिल की खिड़कियां भी पत्थर से बनी हुई हैं। खिड़कियों में जालीदार कारीगरी की गई है। इस इमारत की दूसरी मंजिल का निर्माण बाद में गोविंदराम सेकसरिया महाविद्यालय के प्रबंधन द्वारा किया गया। दूसरी मंज़िल का निर्माण ईंट और सीमेंट से किया गया है और इस पर प्लास्टर किया गया है। इमारत के आंगन में पानी का विशाल फव्वारा लगवाया गया था। रानी सराय का मुख्य द्वार भव्य है। सराय में दो बड़े हाल और 25 कमरो का निर्माण किया गया था । भवन में प्रकाश और हवा की पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

रानी सराय की उपयोगिता – सराय के रूप में इस इमारत का प्रयोग 1907 ई. से लेकर 1944 ई. तक किया गया। 1944 ई. में सराय के रूप में इसका उपयोग बंद कर यहां सरकारी विभागों का रिकार्ड रख दिया गया। 1952 ई. में यह इमारत **गोविंदराम सेकसरिया कालेज** को उपयोग के लिए दे दी गई। कॉलेज प्रशासन द्वारा इस भवन का उपयोग छात्रावास के रूप में किया गया। छात्रों की संख्या अधिक होने पर कमरों की कमी को पूरा करने हेतु इसमें एक और मंजिल का निर्माण करवाया गया। 80 के दशक में एसपी कार्यालय को बड़वाली चौकी स्थित गोपाल राव भैया की हवेली से रानी सराय में स्थानांतरित कर दिया गया। वर्तमान में इसका प्रयोग इंदौर पुलिस आयुक्त के कार्यालय के रूप में किया जा रहा है ।

रानी सराय का ऐतिहासिक महत्व – 1818 ईस्वी की मंदसौर संधि के उपरांत होलकर राज्य में अंग्रेजों का प्रभुत्व फैलने लगा। महारानी विक्टोरिया के प्रतिनिधि के रूप में लॉर्ड रेडाल्फ चर्चिल का इंदौर आने का कार्यक्रम तय हुआ। तब उनके सम्मान में रानी सराय में मराठी नाटकों का आयोजन किया गया। मराठी नाटकों में वर्चस्व जमाने वाले उस समय के प्रसिद्ध **किर्लोस्कर नाट्य मंच** को तार देकर इंदौर आमंत्रित किया गया। महारानी सराय में ही नाट्य कलाकारों के ठहरने का प्रबंध किया गया। रानी सराय में नाट्य गृह हेतु शानदार शामियाना लगाया गया। इस अवसर पर महाकवि कालीदास द्वारा रचित **अभिज्ञान शाकुंतलम** नाटक का प्रस्तुतिकरण किया गया।

महारानी सराय परिसर में महाराजा तुकोजीराव होलकर तृतीय द्वारा व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हेतु **शाही मीना** बाजार का आयोजन किया जाता था। देश के प्रसिद्ध व्यापारी इसमें भाग लेते थे। होलकर राज्य द्वारा सेंट्रल इंडिया के अन्य राजाओं, महाराजाओं और नवावों को मीना बाजार में खरीददारी करने हेतु आमंत्रित किया जाता था। महाराजा स्वयं मीना बाजार में परिवार सहित जाकर खरीददारी करते थे। मीना बाजार समाप्त होने पर महाराजा तुकोजी राव होलकर द्वारा व्यापारियों के पास शेष बची हुई वस्तुओं को खरीद लिया जाता था।

सन 1935 ई. में जब महात्मा गांधी इंदौर आए तो रानी सराय के मैदानी परिसर में हजारों की संख्या में नर–नारी एकत्रित हुए। भारत माता की जय, महात्मा गांधी जिंदाबाद, वंदेमातरम् के गगन भेदी नारों से पूरा इंदौर गूंज उठा। सन 1939 ई. में वीर सावरकर का इंदौर आगमन हुआ। रानी सराय के मैदान में ही आम सभा का आयोजन किया गया। रानी सराय के आस–पास स्थित मैदानी क्षेत्र में अनेक सांस्कृतिक एवं सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता था।

निष्कर्ष – उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह दृष्टिगत होता है कि इंदौर के होल्कर वंशीय शासको ने जनकल्याण और कीर्ति के उद्देश्य से अनेक सरायों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया। उदारमना होलकर शासको ने राजकोष संग्रह से अधिक महत्व जनकल्याण को दिया। महारानी वाराणसी बाई की स्मृति में निर्मित रानी सराय इंदौर शहर में घटित अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रही है। यह इंदौर नगर की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने यहां अनेक आम सभाओं का आयोजन किया। रानी सराय ने सामाजिक समरसता की वृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठिभूमि के लोग आपस में मिलते थे, जिसके परिणामस्वरूप विचारो का आदान–प्रदान हुआ। सूक्ष्म अनुसंधान और विश्लेषण के माध्यम से, इस पेपर ने रानी सराय के वास्तुशिल्प, सामाजिक और आर्थिक आयामों पर प्रकाश डाला है, जो व्यापार, सामुदायिक समारोहों और धार्मिक प्रथाओं के केंद्र के रूप में इसके महत्व को रेखांकित करता है।
इस प्रकार यह इमारत का इंदौर शहर की महत्वपूर्ण विरासत हैं। जिसके साथ इंदौर का गौरवशाली इतिहास जुड़ा हुआ है। वर्तमान में इस इमारत के सरंक्षण की विशेष आवश्यकता है।

संदर्भ सूची –

1. आजाद, नागेंद्र,2006. इंदौर दर्शन, इंदौर, साधना ग्राफिक्स इंदौर.
2. यादव, शिवनारायण, अपना इंदौर, 1996. नई दुनिया प्रेस इंदौर
3. इंदूर विशेषांक, मालवा साहित्य, महाराष्ट्र साहित्य सभा द्वारा प्रकाशित, 1934.
4. अहिल्या स्मारिका, 1970. देवी अहिल्या खासगी ट्रस्ट, इंदौर.
5. पांडेय, राजबली, 1965. अशोक के अभिलेख, वाराणसी, ज्ञानमंडल प्रकाशन लिमिटेड वाराणसी.
6. कानूनगो, के. आर., 1965. शेरशाह और उसका समय, बांबे, ओरियंट लांगमैंस लिमिटेड बांबे.
7. मोतीचंद्र, 1966. सार्थवाह, पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना.
8. शर्मा, हीरालाल, 1967. अहिल्याबाई, नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया.
9. अमर उजाला, इंदौर 18 फ़रवरी 2024
10. हिन्दुस्थान टाइम्स, इंदौर 18 मार्च 2015
11. परिहार, सुभाष, 2008. मुगल भारत में सड़क परिवहन, दिल्ली, आर्यन बुक्स इंटरनेशनल दिल्ली